S.M.A College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I Paper-II

1
15-10-2020

भारत में ग्रामीण बेरोजगारी एवं अर्द्ध-बेरोजगारी,

Dr. S. K. Singh
Deptt of Economics

RURAL UNEMPLOYMENT AND UNDEREMPLOYMENT IN INDIA)

विकसित एवं विकासशील अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के स्वरूप एवं आकार में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। विकसित देशों में बेरोजगारी का प्रमुख कारण देश में प्रभावपूर्ण माँग की कमी है जो अंततः आय की अपर्याप्तता अथवा न्यूनतम का परिणाम होती है। इन अर्थव्यवस्थाओं में माँग एवं रोजगार में प्रायः सीधा सम्बंध पाया जाता है। अतः माँग में कमी का प्रभाव रोजगार पर सीधा पड़ता है। परन्तु भारत जैसे अल्पविकसित देशों में बेरोजगारी विशेषकर ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या का प्रमुख कारण देश में पूंजी एवं अन्य साधनों का अभाव तथा श्रम की प्रचुरता है। देश में बढ़ी जनसंख्या का कृषि एवं प्राथमिक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर होने से भूमि-मनुष्य अनुपात घटता जा रहा है। इसके फलस्वरूप खेतों का आकार छोटा और प्रति व्यक्ति अथवा प्रति परिवार भूमि की औसत उपलब्धता कम हो गई है। वास्तव में, देश की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त जनसंख्या के लिए कृषि व्यवसाय एक धर्मशाला गृह की तरह कार्य कर रहा है। कृषकों को कृषि कार्य में वर्षभर रोजगार नहीं प्राप्त हो पाता। इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी के साथ साथ अर्द्ध-बेरोजगारी तथा प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या भी विद्यमान रहती है। विचित्र स्थिति तो यह है, कि एक तरफ तो देश में जनता की आवश्यकताओं के लिए उपभोग की वस्तुओं का अभाव है तो दूसरी तरफ बड़े पैमाने पर बेरोजगारी की समस्या विद्यमान है। इस विरोधाभास का प्रमुख कारण देश में पूंजी का अभाव है। इसके अतिरिक्त बेरोजगारी के अन्य बहुत-से कारण हैं, यथा - आर्थिक संसाधनों का अपूर्ण उपयोग, विकास कार्यक्रमों की धीमी प्रगति, बड़े पैमाने पर औद्योगिकरण का अभाव, लघु एवं कुटीर उद्योगों का ह्रास आदि। भारत में कृषि सम्बंधी ग्रामीण बेरोजगारी दो रूपों में विद्यमान है - मौसमी (Seasonal) तथा स्थायी अथवा बारहमासी (Perennial)।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - I Paper-I

15-10-2020

कार्य के आधार पर बाजार का वर्गीकरण

Dr. S.K. Singh
Dept of Economics

Classification of Market on the basis of function)

कार्य के आधार पर बाजार को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है:

1) विशिष्ट बाजार (Specialised Market) - कभी-कभी किन्हीं विशेष परिस्थितियों के कारण कुछ वस्तुओं का बाजार एक साथ कुछ क्षेत्रों में या स्थानों में केन्द्रित हो जाता है, इसे विशिष्ट बाजार कहा जाता है। उदाहरण के लिए जहाँ सभी दुकानें सुनारों की होंगी उसे जौहरी बाजार, सर्राफों के क्रय-विक्रय वाले बाजार को सर्राफा कहा जायेगा। विशिष्ट बाजार में केवल एक ही वस्तु का क्रय-विक्रय होता है।

(2) मिश्रित बाजार (Mixed Market) - जब एक ही बाजार में एक से अधिक वस्तुओं या मिली-जुली वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है, तब उस बाजार को मिश्रित बाजार या सामान्य बाजार (General Market) कहा जाता है।

3) नमूनों द्वारा बाजार (Marketing by Sampling) - वर्तमान समय में बड़े पैमाने का क्रय-विक्रय नमूनों के आधार पर किया जाने लगा है। माल बेचने वाली मिलों व फर्मों के द्वारा अपने प्रतिनिधियों को वस्तुओं के नमूने दे दिया जाता है और वे इन नमूनों को दिखाकर माल का आर्डर बुक करते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था कपड़े तथा रंग पेन्ट, आदि में अधिकाधिक लोकप्रिय होती जा रही है।

4) श्रेणियों के आधार पर बाजार (Marketing by Grades) - वर्तमान समय में ग्रेड के द्वारा वस्तु के क्रय-विक्रय को बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। इस व्यवस्था में वस्तु को कई वर्गों या ग्रेडों में बाँट दिया जाता है और इन्हीं ग्रेडों के आधार पर वस्तु का सौदा किया जाता है। उदाहरण के लिए बहुत-से देशों में गेहूँ, कपास टिन, आदि का व्यापार ग्रेडिंग प्रणाली के आधार पर सम्पन्न किया जाने लगा है।